**MERAJ KE WAQIAAT**
**(HINDI BAYAAN)**

# मे'राज के वाक़िआत

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे वाला तबार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है **:** ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या में ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।

(فردوس الاخبار، ج ۲ / ۴۷۱، حدیث ۸۲۱۰)

***चाराए बे चारगां पर हों दुरूदें सद हज़ार***
***बे कसों के ह़ामी व ग़मख़्वार पर लाखों सलाम***
***पुर ज़िया पुरनूर प्यारी प्यारी दाढ़ी पर दुरूद***
***मुस्त़फ़ा के गेसूए ख़मदार पर लाखों सलाम***
***जुब्बए अक़्दस पे चादर पर इ़मामे पर दुरूद***
***जाने आ़लम ! आप की पेज़ार पर लाखों सलाम***

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** ''نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।(1)

1....اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرَانِی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

**दो मदनी फूल :-**

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

## बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ، اُذْكُرُوا اللّٰهَ، تُوبُوا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। ۞ देख कर बयान करूंगा। ۞ पारह 14 सूरतुन्नह़्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً : "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो"[1] में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा। ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो

---

1...بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ماذکر عن بنی اسرائیل، ۲/۴۶۲، حدیث: ۳۴۶۱

www.dawateislami.net

बोलने से बचूंगा। ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आमात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा। ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा। ۞ नज़र की हि़फ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ाति़र ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## अ़ज़ीम रात

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! आज 1436 सिने हिजरी के रजबुल मुरज्जब की 27 वीं शब है, **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का लाख लाख शुक्र कि जिस ने हमें एक मरतबा फिर अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ाइल व बरकात वाली मुक़द्दस रात नसीब फ़रमाई, येह वोह अ़ज़ीम रात है कि जिस में ख़ालिक़े काइनात جَلَّ جَلَالُہٗ ने हमारे आक़ा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, ह़बीबे किब्रिया, शबे अस्रा के दुल्हा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक अ़ज़ीम मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया, इस नूरानी रात में क्या क्या वाक़िआ़त रूनुमा हुवे, क्या क्या अन्वारो तजल्लियात की बारिशें हुईं, आज के बयान में मुख़्तसरन सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे, निहायत ही तवज्जोह और दिलजमई के साथ सुनेंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मे'राज के दुल्हा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत दिल में मज़ीद उजागर होगी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## प्यारे आक़ा का अ़ज़ीम मो'जिज़ा

बिअ़्सते नबवी के बारहवें[12] साल जब कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक इकावन[51] साल हो चुकी थी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मे'राज का अ़ज़ीम मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रात के एक ह़िस्से में न सिर्फ़ मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा की बल्कि सातों आस्मानों की भी सैर कराई, इलावा अज़ीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़बीबे मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने अन्वारो तजल्लियात के मुशाहदात कराए और अपने दीदार व हम कलामी से भी सरफ़राज़ फ़रमाया। मे'राज

शरीफ़ का येह वाक़िआ रजबुल मुरज्जब की 27 तारीख़ को पेश आया । जैसा कि

वलिये कामिल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मख़्दूम मुह़म्मद हाशिम ठठवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ हुज़ूर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बिअ़्सत के बारहवें साल या'नी हिजरत से एक बरस क़ब्ल, हफ़्ता या पीर की रात, मश्हूर रिवायत के मुत़ाबिक़ सत्ताईस[27] रजबुल मुरज्जब को रातों रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सैर (या'नी मे'राज) कराई ।(1)

## शक़्क़े सद्र

शबे मे'राज ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सीनए पुर सकीना को शक़ फ़रमाया । आप के क़ल्बे अत़्हर को बाहर निकाला और ज़मज़म शरीफ़ से भरे हुवे सोने के एक थाल में रख कर धोया । फिर (आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शायाने शान मजी़द) ह़िक्मत, ईमान और नूरे नबुव्वत उस में भरा और सीनए मुबारक में उसे रख कर सूई से सी दिया । उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक में चार मरतबा शक़्क़े सद्र हुवा और मे'राज शरीफ़ की रात को पेश आने वाला इन में से चौथा था ।

पहली मरतबा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत के वक़्त, दूसरी बार जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक दस बरस थी और तीसरी दफ़्आ़ ग़ारे ह़िरा में कुरआने मजीद की पहली वह़ी के मौक़अ़ पर ।

(سیرۃ سید الانبیاء، ص۱۲۷ ملخصاً)

## मे'राज के दुल्हा की सुवारी

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि प्यारे आक़ा, शबे अस्रा के दुल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे पास बुराक़ (जिस का नाम जारूद था) लाया गया, जो गधे से बड़ा और ख़च्चर से छोटा, इन्तिहाई सफ़ेद रंग का लम्बे क़द वाला चोपाया था, उस का क़दम नज़र की

---

1 . . . سیرۃ سید الانبیاء، ص۱۲۷

www.dawateislami.net

इन्तिहा पर पड़ता था, मैं उस पर सुवार हो कर बैतुल मक्दस (بَیۡتُ الۡمَقۡدَس) तक पहुंचा और जिस जगह अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी सुवारियों को बांधते थे, वहां मैं ने उस को बांध दिया, फिर मैं मस्जिदे (अक्सा) में दाख़िल हुवा और उस में दो रक्अ़त नमाज़ अदा की।[1]

## अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इमामत

इस नमाज़ में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इमाम थे।[2] (क्यूंकि) प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने आ़ली के इज़्हार के लिये बैतुल मक्दस (بَیۡتُ الۡمَقۡدَس) में तमाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को जम्अ़ किया गया था[3] जब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم यहां तशरीफ़ लाए तो इन सब ह़ज़रात ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देख कर खुश आमदीद कहा और नमाज़ के वक़्त सब ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इमामत के लिये आगे किया, फिर ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیۡہِ السَّلَام ने दस्ते मुबारक पकड़ कर आगे बढ़ा दिया और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इमामत फ़रमाई।[4]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा बुसैरी رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं :

وَقَدَّمَتۡكَ جَمِیۡعُ الۡاَنۡبِیَاءِ بِھَا
وَالرُّسُلِ تَقۡدِیۡمَ مَخۡدُوۡمٍ عَلٰی خَدَمٖ[5]

---

1....مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء برسول اللہ...الخ، ص۹۷، حدیث۲۵۹

2....سیرۃ سید الانبیاء، ص۱۲۸

3....سنن النسائی، کتاب الصلاۃ، باب فرض الصلاۃ...الخ، ص۸۱، الحدیث:۴۴۸.

4....المعجم الاوسط للطبرانی، باب العین، من اسمہ علی، ۳/۶۵، الحدیث: ۳۸۷۹.
والسیرۃ الحلبیۃ، باب ذکر الاسراء والمعراج...الخ، ۱/۵۲۵.

5...قصیدۃ البردۃ مع شرحھا عصیدۃ الشھدۃ، الفصل العاشر فی معراج...الخ، ص۲۴۰.

www.dawateislami.net

या'नी बैतुल मक्दस में तमाम अम्बिया व रुसुल عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आगे किया, जैसे मख़्दूम अपने ख़ादिमों के आगे होता है।

سُبۡحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ क्या ख़ूब नमाज़ है कि तमाम अम्बिया व रुसुल عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मुक़्तदी, हमारे प्यारे आक़ा, इमामुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इमाम और पहला क़िब्ला जाए नमाज़ है, यक़ीनन काइनात में ऐसी नमाज़ पहले कभी नहीं हुई, फ़लक ने ऐसा नज़्ज़ारा कभी नहीं देखा। बहर ह़ाल आज शबे अस्रा के दुल्हा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अव्वल और आख़िर होने का उ़क़्दा भी खुल गया, इस के राज़ से भी पर्दा उठ गया और मा'ना रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ हो गए, क्यूंकि आज आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो कि सब से आख़िरी रसूल हैं, पहले के अम्बिया और रसूलों की इमामत फ़रमा रहे हैं। इसी राज़ को बयान करते हुवे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं :

***नमाज़े अक़्सा में था येही सिर्र, इ़यां हों मा'नए अव्वल आख़िर***
***कि दस्त बस्ता हैं पीछे ह़ाज़िर, जो सल्त़नत आगे कर गए थे*** (1)

**शे'र की वज़ाह़त :** शबे मे'राज, मस्जिदे अक़्सा में सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सारे नबियों की इमामत फ़रमाई और उन को नमाज़ पढ़ाई, इस में राज़ येह था कि अव्वल आख़िर (या'नी पहले और आख़िरी) का फ़र्क़ वाज़ेह़ हो जाए, येह वाज़ेह़ हो जाए कि सब नबियों के आख़िर में तशरीफ़ लाने वाले नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी नबी से शानो अ़ज़मत में कम नहीं बल्कि शानो अ़ज़मत में सब से बढ़ कर हैं, इस की दलील येह है कि वोह सारे नबी जो पहले अपनी नबुव्वतों का ए'लान कर चुके, वोह सारे के सारे हाथ बांध कर मक्के मदीने के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे खड़े हैं।

---

1....ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सए अव्वल, स. 232

www.dawateislami.net

नमाज़ के बा'द मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वहां मौजूद अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुलाक़ात फ़रमाई तो (बारी बारी) सब ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ व सना बयान की। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : तमाम ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे ख़लील किया और मुझे मुल्के अज़ीम इनायत फ़रमाया नीज़ अपना फ़रमां बरदार और लोगों का इमाम बनाया कि मेरी इक्तिदा की जाए और मुझे आग से बचाया और इसे मेरे लिये ठन्डा और सलामती वाला कर दिया।

इस के बा'द हज़रते मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام खड़े हुवे और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ फ़रमाई : तमाम ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे अपना कलीम बनाया और मेरे हाथों फ़िरऔन को हलाक किया और बनी इस्राईल को नजात दी और मेरी उम्मत (के एक गुरौह) को ऐसी क़ौम बनाया कि वोह ह़क़ की राह बताते हैं और ह़क़ के साथ इन्साफ़ करते हैं।

फिर हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ बयान करते हुवे फ़रमाया : तमाम ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे बहुत बड़ी बादशाहत दी और मुझे ज़बूर का इल्म दिया और मेरे हाथ में लोहा नर्म किया और मेरे लिये पहाड़ों और परन्दों को मुसख़्ख़र किया जो (मेरे साथ) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान करते हैं और मुझे ह़िक्मत और क़ौले फ़ैसल (फ़ैसला करने का इल्म) अ़ता फ़रमाया।

फिर हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ बयान करते हुवे फ़रमाया : तमाम ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मेरे लिये हवाओं को मुसख़्ख़र किया और जिन्नात को मेरा ताबेअ़ बना दिया, जो मेरी मर्ज़ी के मुत़ाबिक़ ऊंचे ऊंचे मह़ल्लात और तस्वीरें और बड़े ह़ौज़ों के बराबर लगन (त़श्त) और लंगर दार देगें बनाते हैं। इसी त़रह़ मुझे परन्दों की बोली सिखाई और अपने फ़ज़्ल से मुझे हर चीज़ अ़ता की

www.dawateislami.net

और अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत बख़्शी और मुझे ऐसी सल्त़नत दी जो मेरे बा'द किसी को लाइक़ न हो और मेरी बादशाहत को ऐसा कर दिया कि इस का कोई ह़िसाब नहीं ।

याद रहे कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की शरीअ़त में तस्वीर ह़राम न थी ।(1)

इस के बा'द ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ बयान करते हुवे फ़रमाया : तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, जिस ने मुझे अपना कलिमा क़रार दिया और इस बात में मुझे भी आदम عَلَيْهِ السَّلَام की त़रह़ किया कि उन्हें मिट्टी से बनाया और फ़रमाया "كُنْ" (हो जा) तो वोह हो गए और मुझे किताब व ह़िक्मत और तौरैत व इन्जील का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया और मुझे येह कमाल बख़्शा कि मैं मिट्टी से परन्द की सी मूरत (सूरत) बनाता हूं, फिर उस में फूंक मारता हूं तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से फ़ौरन परन्द हो जाती है और येह कमाल भी दिया कि मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धे और सपेद दाग़ (बर्स) वाले को और मुर्दे जिलाता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से और मुझे (बिग़ैर मौत के आस्मान पर) उठा लिया और मुझे पाक किया (काफ़िरों से) और मुझे और मेरी मां को शैत़ान मर्दूद के शर से पनाह अ़त़ा फ़रमाई, लिहाज़ा हमारे ख़िलाफ़ शैत़ान के लिये कोई रास्ता नहीं ।

जब सब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना और उस की वोह ने'मतें बयान कर चुके जो उन्हें अ़त़ा हुई थीं, तो नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां, शहनशाहे कौनो मकां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खड़े हुवे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, जिस ने मुझे सारे जहान के लिये रह़मत बना कर भेजा और मुझे ख़ुश ख़बरी सुनाने वाला और डर सुनाने वाला बना कर भेजा और मुझ पर क़ुरआन नाज़िल किया, जिस में हर चीज़ का रोशन

---

1....ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह, 22, सबा, तह़्तुल आयत : 13

www.dawateislami.net

बयान है और मेरी उम्मत को तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल बनाया, मेरी उम्मत ही सब से आख़िरी उम्मत है और (जन्नत में दाख़िल होने वाली उम्मतों में) येही सब से पहली उम्मत होगी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने (हिदायत व मा'रिफ़त और इल्मो हिक्मत के लिये) मेरा सीना कुशादा किया और (उम्मत के हक़ में मेरी शफ़ाअत क़बूल कर के) मेरा बोझ उतार दिया और मेरे लिये मेरा ज़िक्र बुलन्द कर दिया और मुझे आख़िरी नबी बना कर भेजा।

निबय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू मुकम्मल होने के बा'द हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने खड़े हो कर इरशाद फ़रमाया कि येही वोह अज़ीमुश्शान अवसाफ़ व कमालात हैं, जिन की वजह से सय्यिदुल मुर्सलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मर्तबा हम सब से अफ़्ज़ल व आ'ला है। (خصائص الکبری، ۱/۲۸۵ ملخصاً و مفهوما)

*सब से औला व आ'ला हमारा नबी — सब से बाला व वाला हमारा नबी*
*बज़्मे आख़िर का शम्अ़ फ़रोज़ां हुवा — नूरे अव्वल का जल्वा हमारा नबी*
*ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल — और रसूलों से आ'ला हमारा नबी*
*मुल्के कौनैन में अम्बिया ताजदार — ताजदारों का आक़ा हमारा नबी*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से मुलाक़ात के बा'द जब हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बैतुल मक़्दस से आगे आस्मानों की तरफ़ रवाना हुवे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में शराब और दूध का बरतन पेश किया गया। चुनान्चे,

दो जहां के आक़ा, शबे अस्रा के दुल्हा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام मेरे पास एक बरतन में शराब और एक बरतन में दूध ले कर आए, मैं ने दूध ले लिया।[1] इस पर हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ هَدَاكَ لِلْفِطْرَةِ لَوْ اَخَذْتَ الْخَمْرَ غَوَتْ اُمَّتُكَ या'नी तमाम ता'रीफ़ें

---

1...مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء برسول الله... الخ، ص۹۷، حدیث۲۵۹

www.dawateislami.net

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने फ़ित़रत की जानिब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रहनुमाई फ़रमाई, अगर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शराब का प्याला क़बूल फ़रमाते तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत गुमराह हो जाती।[1]

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि फिर मुझे आस्मान की त़रफ़ ले जाया गया। जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने आस्मान का दरवाज़ा खट-खटाया। पूछा गया कि आप कौन हैं ? उन्हों ने कहा : मैं जिब्राईल हूं, पूछा गया : आप के साथ कौन हैं ? उन्हों ने कहा : येह ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं, पूछा गया : क्या इन्हें बुलाया गया है ? उन्हों ने कहा : हां इन्हें बुलाया गया है। हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया फिर हमारे लिये दरवाज़ा खोल दिया गया, वहां ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से मेरी मुलाक़ात हुई, उन्हों ने मुझे मरह़बा कहा और दुआ़ दी।

(مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء برسول اللہ... الخ، ص۹۷، حدیث۲۵۹)

## फ़िक्रे अवलाद में गिर्या व ज़ारी

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दाएं बाएं कुछ लोगों को मुलाह़ज़ा फ़रमाया, जब आप عَلَیْہِ السَّلَام अपनी दाईं जानिब देखते तो हंस पड़ते हैं और जब बाईं जानिब देखते तो रो पड़ते हैं। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : इन के दाईं और बाईं जानिब जो येह सूरतें हैं येह इन की अवलाद हैं, दाईं जानिब वाली जन्नती हैं और बाईं जानिब वाले जहन्नमी हैं।[2]

फ़रमाया कि फिर मुझे दूसरे आस्मान पर ले जाया गया, जिब्राईले अमीन ने दरवाज़ा खट-खटाया, पूछा गया कि आप कौन हैं ? उन्हों ने कहा : जिब्राईल हूं, पूछा : तुम्हारे साथ कौन हैं ? कहा : येह ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं, पूछा : क्या इन्हें बुलाया गया है ? कहा : हां इन्हें बुलाया गया है, हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया फिर हमारे लिये दरवाज़ा खोल

---

1....صحیح البخاری، ص ۱۱۸۱، الحدیث: ۴۷۰۹

2....صحیح البخاری، کتاب الصلاۃ، باب کیف فرضت... الخ، ص ۱۶۱، الحدیث: ۳۴۹.

दिया गया और वहां दो ख़ालाज़ाद भाइयों ह़ज़रते ई़सा बिन मरयम और ह़ज़रते यह़्या बिन ज़करिय्या (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से मेरी मुलाक़ात हुई, उन दोनों ने मुझे मरह़बा कहा और दुआ़ दी,

फिर हमें तीसरे आस्मान पर ले जाया गया, जिब्राईल ने दरवाज़े पर दस्तक दी, आवाज़ आई : आप कौन हैं ? कहा : जिब्राईल हूं, पूछा : आप के साथ कौन हैं ? कहा : येह ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, पूछा गया : क्या इन्हें बुलाया गया है ? कहा : हां इन्हें बुलाया गया है । हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया फिर हमारे लिये दरवाज़ा खोल दिया गया और वहां मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से हुई जिन्हें हुस्न का आधा ह़िस्सा अ़ता किया गया है । उन्हों ने मुझे मरह़बा कहा और दुआ़ दी ।

फिर मुझे चौथे आस्मान पर ले जाया गया, जिब्राईल ने आस्मान के दरवाज़े पर दस्तक दी, पूछा गया : कौन है ? कहा : जिब्राईल हूं, पूछा आप के साथ कौन हैं ? कहा : येह ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, पूछा : क्या इन्हें बुलाया गया है ? कहा : हां बुलाया गया है । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : फिर हमारे लिये दरवाज़ा खोल दिया गया तो मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام से हुई उन्हों ने मुझे मरह़बा कहा और दुआ़ दी । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में फ़रमाया हम ने इन को बुलन्द मक़ाम अ़ता फ़रमाया है ।

फिर मुझे पांचवें आस्मान की त़रफ़ ले जाया गया, जिब्राईल ने दरवाज़े पर दस्तक दी, पूछा गया : कौन है ? कहा : जिब्राईल हूं, पूछा : आप के साथ कौन हैं ? कहा : येह ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, पूछा : क्या इन्हें बुलाया गया है ? कहा : हां बुलाया गया है । हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : फिर हमारे लिये आस्मान का दरवाज़ा खोल दिया गया और ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام से मेरी मुलाक़ात हुई उन्हों ने मुझे मरह़बा कहा और दुआ़ दी, फिर मुझे छटे आस्मान पर ले जाया गया, जिब्राईल ने दरवाज़ा खट-खटाया तो पूछा गया : कौन है ? उन्हों ने कहा: मैं जिब्राईल हूं, पूछा : आप के साथ कौन हैं ? कहा : येह ह़ज़रत मुह़म्मद

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं, पूछा : क्या इन्हें बुलाया गया है ? कहा : हां बुलाया गया है । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया फिर हमारे लिये दरवाज़ा खोल दिया गया और मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से हुई, उन्हों ने मुझे ख़ुश आमदीद कहा : और दुआ़ दी ।

फिर मुझे सातवें आस्मान पर ले जाया गया, जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने दरवाज़ा खट-खटाया, पूछा गया : कौन है ? कहा : मैं जिब्राईल हूं, पूछा : आप के साथ कौन हैं ? कहा : येह ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं, पूछा : क्या इन्हें बुलाया गया है ? उन्हों ने कहा : हां इन्हें बुलाया गया है फिर हमारे लिये दरवाज़ा खोल दिया गया, और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام से मेरी मुलाक़ात हुई, जो बैतुल मा'मूर से टेक लगाए हुवे थे और उस बैतुल मा'मूर में हर रोज़ सत्तर (70) हज़ार फ़िरिश्ते जाते हैं और जो फ़िरिश्ता एक बार हो आए उस को दोबारा मौक़अ़ नहीं मिलता ।(1) ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने (ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के बारे में हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से) अ़र्ज़ किया : येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिद हैं, इन्हें सलाम कहिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम कहा, उन्हों ने सलाम का जवाब दिया, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुश आमदीद करते हुवे कहा : "مَرْحَبًا بِالْاِبْنِ الصَّالِحِ وَالنَّبِیِّ الصَّالِحِ" या'नी सालेह़ बेटे और सालेह़ नबी को ख़ुश आमदीद ।"(2)

सातवें आस्मान पर ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से मुलाक़ात फ़रमाने के बा'द सय्यिदे वाला तबार, दो आ़लम के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिद्रतुल मुन्तहा के पास तशरीफ़ लाए ।(3) येह एक नूरानी बैरी का दरख़्त है, जिस की जड़ छटे आस्मान पर और शाख़ें सातवें आस्मान के ऊपर हैं,(4) इस के फल मक़ामे हिज्र के मटकों की त़रह़ बड़े बड़े और पत्ते

---

1...مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء برسول اللہ...الخ، ص۹۷، حدیث ۲۵۹

2...صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص۹۷۷، الحدیث: ۳۸۸۷.

3...صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص۹۷۶، الحدیث: ۳۸۸۷.

4...मिरआतुल मनाजीह़, मे'राज का बयान, पहली फ़स्ल, 8/143

www.dawateislami.net

हाथी के कानों की त़रह़ हैं । ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : येह सिद्रतुल मुन्तहा है । प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां चार नहरे मुलाह़ज़ा फ़रमाईं जो सिद्रतुल मुन्तहा की जड़ से निकलती थीं, उन में से दो तो ज़ाहिर थीं और दो ख़ुफ़्या (पोशीदा) । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ जिब्राईल ! येह नहरें कैसी हैं ? अ़र्ज़ किया : ख़ुफ़्या नहरें तो जन्नत की हैं और ज़ाहिरी नहरें नील और फ़ुरात हैं ।[1]

## मक़ामे मुस्तवा

जब प्यारे आक़ा, मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिद्रतुल मुन्तहा से आगे बढ़े तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام वहीं ठहर गए और आगे जाने से मा'ज़िरत ख़्वाह हुवे ।[2] शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि बा'ज़ रिवायतों में आया है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : अगर तुम्हारी कोई ह़ाजत है तो मुझ से अ़र्ज़ करो, मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश कर दूंगा । ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मेरी येह तमन्ना बयान कर दीजियेगा कि वोह रोज़े क़ियामत मेरे बाज़ूओं को और भी ज़ियादा कुशादा फ़रमा दे ताकि मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को अपने बाज़ूओं के ज़रीए पुल सिरात़ से गुज़ार सकूं । (مدارج النبوۃ، ۱/۱۶۴)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

***अहले सिरात़ रूह़े अमीं को ख़बर करें    जाती है उम्मते नबवी फ़र्श पर करें***

एक दूसरे मक़ाम पर इस से भी बढ़ कर फ़रमाया :

***पुल से उतारो राह गुज़र को ख़बर न हो    जिब्रील पर बिछाएं तो पर को ख़बर न हो***

---

1....صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، ص۹۷۶، الحدیث:۳۸۸۷.
وصحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء...الخ، ص۸۱، الحدیث:۱٦٤.

2....المواھب اللدنیۃ، المقصد الخامس، ۲/۳۸۱.

www.dawateislami.net

फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (तन्हा) आगे बढ़े और बुलन्दी की त़रफ़ सफ़र फ़रमाते हुवे एक मक़ाम पर तशरीफ़ लाए, जिसे मुस्तवा कहा जाता है, यहां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़लमों की चर-चराहट समाअ़त फ़रमाई।(1) येह वोह क़लम थे जिन से फ़िरिश्ते रोज़ाना के अह़कामे इलाहिय्या लिखते हैं और लौह़े मह़फ़ूज़ से एक साल के वाक़िआ़त अलग अलग सह़ीफ़ों में नक़्ल करते हैं और फिर येह सह़ीफ़े शा'बान की पन्दरहवीं15 शब मुतअ़ल्लिक़ हुक्काम फ़िरिश्तों के ह़वाले कर दिये जाते हैं।(2)

## अ़र्शे उ़ला से भी ऊपर

फिर मुस्तवा से आगे बढ़े तो अ़र्श आया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस से भी ऊपर तशरीफ़ लाए और फिर वहां पहुंचे जहां ख़ुद "कहां" और "कब" भी ख़त्म हो चुके थे, क्यूंकि येह अल्फ़ाज़ जगह और ज़माने के लिये बोले जाते हैं और जहां हमारे हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रौनक़ अफ़रोज़ हुवे वहां जगह थी न ज़माना। इसी वजह से उसे ला मकां कहा जाता है।

***सुराग़े ऐनो मता कहां था, निशाने कैफ़ो इला कहां था***
***न कोई राही न कोई साथी न संगे मन्ज़िल न मरह़ले थे***(3)

**ऐन :** कहां। **मता :** कब। **कैफ़ :** कैसे। **इला :** कहां तक। **संगे मन्ज़िल :** पथ्थर का वोह निशान जो मन्ज़िल का पता देता है।

**शे'र की वज़ाह़त :** शबे मे'राज, ह़बीबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहां गए ? कब गए ? कैसे गए ? कहां तक गए ? इन सुवालात का जवाब कोई क्या बताए ! क्यूंकि जहां मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शबे मे'राज पहुंचे, वहां कब और कहां का तसव्वुर भी नहीं, कैसे और कहां का निशान नहीं, कोई आप के साथ नहीं, न कोई मन्ज़िल का निशां, येह सारी बातें वहां से तअ़ल्लुक़ रखती हैं, जो आ़लम ही कुछ और था।

---

1....صحیح البخاری، کتاب الصلاۃ، باب کیف فرضت...الخ، ص ١٦١، الحدیث: ٣٤٩.

2....मिरआतुल मनाजीह़, मे'राज का बयान, पहली फ़स्ल, 8/155

3....ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा अव्वल, स. 235

www.dawateislami.net

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** यहां **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वोह क़ुर्बे ख़ास अ़ता फ़रमाया कि न किसी को मिला न मिले । चुनान्चे, पारह 27, सूरतुन्नज्म की आयत नम्बर 8,9,10 में इरशादे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ है :

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ﴿٨﴾ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ﴿٩﴾ فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ﴿١٠﴾

(پ٢٧، النجم:٨، ٩، ١٠)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *फिर वोह जल्वा नज़दीक हुवा फिर ख़ूब उतर आया तो उस जल्वे और उस मह़बूब में दो हाथ का फ़ासिला रहा बल्कि इस से भी कम । अब वह़ी फ़रमाई अपने बन्दे को जो वह़ी फ़रमाई ।*

आ़शिक़े माहे रिसालत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه क़सीदए मे'राजिय्या में इन मुबारक घड़ियों के बारे में लिखते हैं, कि जिस घड़ी प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ुर्बे ख़ास अ़ता फ़रमाया गया, उस वक़्त क्या समां था, लिखते हैं :

*बढ़ ऐ मुह़म्मद, करीं हो अह़मद, क़रीब आ सरवरे मुमज्जद*
*निसार जाऊं येह क्या निदा थी, येह क्या समां था, येह क्या मज़े थे*
*तबारकल्लाह शान तेरी तुझी को ज़ैबा है बे नियाज़ी*
*कहीं तो वोह जोशे लन तरानी कहीं तक़ाज़े विसाल के थे*
*ख़िरद से कह दो कि सर झुका ले गुमां से गुज़रे गुज़रने वाले*
*पड़े हैं यां ख़ुद जिहत को लाले किसे बताए किधर गए थे*
*उधर से पैहम तक़ाज़े आना इधर था मुश्किल क़दम बढ़ाना*
*जलाल व हैबत का सामना था जमाल व रह़मत उभारते थे*
*बढ़े तो लेकिन झिझकते डरते ह़या से झुकते अदब से रुकते*
*जो क़ुर्ब इन्हीं की रविश पे रखते तो लाखों मन्ज़िल के फ़ासिले थे*
*वोही है अव्वल वोही है आख़िर वोही है बात़िन वोही है ज़ाहिर*
*उसी के जल्वे उसी से मिलने उसी से उस की त़रफ़ गए थे*

सलामे रज़ा में है :

***किस को देखा येह मूसा से पूछे कोई***
***आंखों वालों की हिम्मत पे लाखों सलाम***

सूरए नज्म में इरशाद होता है :

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿۱۷﴾ (پ۲۷،النجم:۱۷)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आंख न किसी त़रफ़ फिरी न ह़द से बढ़ी

ह़ज़रते इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दे को वह़ी फ़रमाई जो वह़ी फ़रमाई येह वह़ी बे वासित़ा थी कि **अल्लाह** तआ़ला और उस के ह़बीब के दरमियान कोई वासित़ा न था और येह ख़ुदा और रसूल के दरमियान के अस्रार हैं जिन पर उन के सिवा किसी को इत्त़िलाअ़ नहीं ।(1)

(राज़ की बातों के इ़लावा) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इरशाद फ़रमाया कि जिब्रीले अमीन की वोह ह़ाजत जिस के बारे में तुम से अ़र्ज़ किया था वोह क्या है ? आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़र्ज़ किया : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू उसे ख़ूब जानता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : ऐ मह़बूब ! मैं ने उस की ह़ाजत क़बूल फ़रमाई लेकिन उन लोगों के ह़क़ में जो तुम से मह़ब्बत करते, तुम्हें दोस्त रखते और तुम्हारी सोह़बत में रहते हैं । (مدارج النبوۃ، ۱/۱۲۹)

ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर एक दिन और रात में पचास (50) नमाज़ें फ़र्ज़ कीं, जब मैं ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के पास पहुंचा तो उन्हों ने कहा : आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप की उम्मत पर क्या फ़र्ज़ किया है ? मैं ने कहा : हर दिन रात में

1... ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 27, अन्नज्म : 10

www.dawateislami.net

पचास (50) नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं । ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा : अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास जा कर तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी) का सुवाल कीजिये, क्यूंकि आप की उम्मत पचास नमाज़ें न पढ़ सकेगी, मैं बनी इस्राईल को आज़्मा चुका हूं, (प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया) मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास लौट कर गया और अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मेरी उम्मत पर कुछ तख़्फ़ीफ़ फ़रमा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पांच नमाज़ें कम कर दीं, मैं मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के पास पहुंचा और कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पांच नमाज़ें कम कर दी हैं । ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा : आप की उम्मत इतनी नमाज़ें भी न पढ़ सकेगी जाइये और जा कर मज़ीद कमी का सुवाल कीजिये, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के पास से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जाने आने का सिलसिला जारी रहा (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से हर बार नमाज़ों में कुछ तख़्फ़ीफ़ हो जाती मगर इस के बा वुजूद ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام मज़ीद कमी करवाने के लिये मुझे दोबारा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में भेजते रहे) ह़त्ता कि (जब सिर्फ़ पांच नमाज़ें रह गईं) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) दिन और रात की येह पांच नमाज़ें हैं और इन में से हर नमाज़ का दस गुना अज्र मिलेगा लिहाज़ा (अज्रो सवाब के ए'तिबार से) येह पचास नमाज़ें हो जाएंगी, और (मज़ीद फ़ज़्लो करम येह है कि) जो शख़्स नेक काम की निय्यत करे फिर वोह नेक काम न कर पाए तो उस के लिये (सिर्फ़ अच्छी निय्यत की वजह से) एक नेकी लिख दी जाएगी और अगर वोह उस नेकी को कर गुज़रे तो दस (10) नेकियां लिखी जाएंगी और जो शख़्स बुरे काम का क़स्द करे और वोह बुरा काम न करे तो उस के नामए आ'माल में (बुरी निय्यत के जुर्म में) कोई गुनाह नहीं लिखा जाएगा । अलबत्ता अगर वोह बुरा काम कर लेगा तो अब उस की एक बुराई लिखी जाएगी ।

www.dawateislami.net

इस के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि फिर मैं ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंचा और उन को इन अह़काम की ख़बर दी तो उन्हों ने अब की बार भी येही कहा कि अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास जा कर मज़ीद तख़्फ़ीफ़ का सुवाल कीजिये, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि (नमाज़ों में कमी करवाने के लिये) मैं इतनी मरतबा अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जा चुका हूं कि अब (इस काम के लिये जाने में) मुझे ह़या आती है। (مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء برسول اللہ...الخ، ص۹۷، حدیث۲۵۹)

कुरआने पाक के पन्दरहवें[15] पारे में सूरए बनी इस्राईल की पहली आयत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस सफ़रे मे'राज के इब्तिदाई ह़िस्से का तज़्किरा करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا

(پ۱۵، بنی اسرائیل:۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मक़्दस) तक।

याद रहे कि हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा, शबे अस्रा के दुल्हा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सफ़रे मे'राज मस्जिदे ह़राम से शुरूअ़ हो कर मस्जिदे अक़्सा पर ख़त्म नहीं हुवा था बल्कि कुरआनो ह़दीस से साबित है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मे'राज शरीफ़ की रात न सिर्फ़ सातों आस्मानों की सैर फ़रमाई बल्कि इस से भी वराउल वरा (या'नी बहुत आगे) जहां तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तशरीफ़ ले गए। चुनान्चे,

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में शर्हे़ हमज़िय्या के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते मूसा

www.dawateislami.net

عَلَيْهِ السَّلَام को दौलते कलाम अ़ता हुई, हमारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वैसी ही शबे अस्रा मिली और ज़ियादते क़ुर्ब (क़ुर्बे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की ज़ियादती) और चश्मे सर (सर की आंख) से दीदारे इलाही इस के इलावा। और भला कहां कोहे तूर जिस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से मुनाजात हुई और कहां **मा फ़ौक़ुल अ़र्श** (अ़र्श से भी ऊपर) जहां हमारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कलाम हुवा।

इसी किताब के ह़वाले से मज़ीद फ़रमाते हैं कि नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने जिस्मे पाक के साथ बेदारी में शबे अस्रा (या'नी मे'राज की रात) आस्मानों तक तरक़्क़ी फ़रमाई, फिर सिद्रतुल मुन्तहा, फिर मक़ामे मुस्तवा, फिर अ़र्श व रफ़-रफ़ व दीदारे (इलाही عَزَّوَجَلَّ) तक। (फ़तावा रज़विय्या, 30/646)

अलबत्ता आयते मुबारका में जिस ह़िस्सए मे'राज का बयान किया गया सिर्फ़ वोही ह़िस्सा भी ब ज़ाते ख़ुद निहायत ही ह़ैरत अंगेज़ मो'जिज़ा है क्यूंकि मस्जिदे ह़राम और मस्जिदे अक़्सा के दरमियान अच्छा ख़ासा फ़ासिला था, लिहाज़ा किसी आ़म शख़्स का मस्जिदे अक़्सा तक जाना और फिर रातों रात वापस भी आ जाना तो बहुत दूर की बात है एक रात में सिर्फ़ यक त़रफ़ा फ़ासिला तै करना भी मुमकिन न था। जैसा कि साह़िबे रूहुल बयान ह़ज़रते अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं अक़्सा तक का ज़िक्र इस वजह से किया गया कि उस ज़माने में मस्जिदे अक़्सा से दूर कोई और मस्जिद न थी, मक्कए मुकर्रमा से सब से ज़ियादा दूर येही मस्जिद थी, मस्जिदे ह़राम व मस्जिदे अक़्सा के दरमियान एक महीने से भी ज़ियादा मसाफ़त का फ़ासिला था। (روح البیان، پ۱۵، بنی اسرائیل، تحت الآیۃ:۱، ۵/۱۱۴)

## जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام के नज़दीक सिद्दीक़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मे'राज की रात सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام से इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

يَا جِبْرِيْلُ! اِنَّ قَوْمِیْ يَتَّهِمُوْنِیْ وَلَا يُصَدِّقُوْنِیْ या'नी ऐ जिब्रील ! मेरी क़ौम मुझ पर तोहमत लगाएगी और वोह मेरी तस्दीक़ नहीं करेगी ।" ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "اِنِ اتَّهَمَكَ قَوْمُكَ فَاِنَّ اَبَا بَكْرٍ يُصَدِّقُكَ وَهُوَ الصِّدِّيْق या'नी अगर आप की क़ौम आप पर तोहमत लगाएगी तो क्या हुवा ? अबू बक्र (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) तो आप की तस्दीक़ करेंगे क्यूंकि वोह तो सिद्दीक़ हैं !"

(المعجم الاوسط للطبرانی، الحدیث: ۷۱۴۸، ۷۱۷۳، ج۵، ص ۲۲۶ ملخصاً)

चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि जब शबे मे'राज की सुब्ह़ ह़त़ीमे का'बा के पास खड़े हो कर हमारे आक़ा व मौला, शबे अस्रा के दुल्हा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों के सामने इस सुहानी मे'राज का ज़िक्र किया तो अहले ईमान का ईमान तो और मज़बूत़ हो गया मगर मुनाफ़िक़ीन व मुशरिकीन के तो गोया पाउं तले से ज़मीन निकल गई कि एक रात में इतना त़वील सफ़र कैसे त़ै कर लिया । चुनान्चे,

## आंखें मीच कर तस्दीक़ करने वाली ज़ात

मुशरिकीन दौड़ते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास पहुंचे और कहने लगे : "هَلْ لَكَ اِلٰی صَاحِبِكَ يَزْعُمُ اَنَّهُ اَسْرٰی بِهِ اللَّيْلَةَ اِلٰی بَيْتِ الْمَقْدَس؟ या'नी क्या आप इस बात की तस्दीक़ कर सकते हैं जो आप के दोस्त ने कही है कि उन्हों ने रातों रात मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा की सैर की ?" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "اَوَ قَالَ ذٰلِكَ؟ क्या आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वाक़ेई येह बयान फ़रमाया है ?" उन्हों ने कहा : "जी हां ।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "لَئِنْ قَالَ ذٰلِكَ لَقَدْ صَدَقَ या'नी अगर आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह इरशाद फ़रमाया है तो यक़ीनन सच फ़रमाया है । उन्हों ने कहा : "اَوَ تُصَدِّقُهُ اَنَّهُ ذَهَبَ اللَّيْلَةَ اِلٰی بَيْتِ الْمَقْدَسِ وَجَاءَ قَبْلَ اَنْ يُّصْبِحَ؟" या'नी क्या आप इस ह़ैरान कुन बात की भी तस्दीक़ करते हैं कि वोह आज रात बैतुल मक़्दस गए और सुब्ह़ होने से पहले वापस भी आ गए ?" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया :

"نَعَمْ! اِنِّیْ لَاُصَدِّقُهٗ فِیْمَا هُوَ اَبْعَدُ مِنْ ذٰلِكَ اُصَدِّقُهٗ بِخَبَرِ السَّمَاءِ فِیْ غَدْوَةٍ اَوْ رَوْحَةٍ" जी हां ! मैं तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आस्मानी ख़बरों की भी सुब्हो शाम तस्दीक़ करता हूं । यक़ीनन वोह तो इस से भी ज़ियादा हैरान कुन और तअ़ज्जुब वाली बातें होती हैं ।" पस इस वाक़िए के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **सिद्दीक़** मश्हूर हो गए । (المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر الاختلاف۔۔۔الخ، الحدیث: ۴۵۱۵، ج۴، ص۲۵)

बा'ज़ बद बातिन लोगों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस अ़ज़ीम मो'जिज़े को झुटलाने के लिये त़रह़ त़रह़ के सुवालात करना शुरूअ़ कर दिये । जैसा कि,

ह़दीसे पाक में है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : قُرَیْشٌ تَسْاَلُنِیْ عَنْ مَسْرَایَ क़ुरैश मुझ से मेरे सफ़रे मे'राज के मुतअ़ल्लिक़ सुवालात कर रहे थे । فَسَاَلَتْنِیْ عَنْ اَشْیَاءَ مِنْ بَیْتِ الْمَقْدِسِ لَمْ اُثْبِتْهَا तो उन्हों ने मुझ से बैतुल मक़्दस की ऐसी चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ सुवालात किये, जिन्हें (ग़ैर ज़रूरी होने की वजह से) मैं ने याद न रखा था । فَكُرِبْتُ كُرْبَةً مَا كُرِبْتُ مِثْلَهٗ قَطُّ मुझे इस बात से इस क़दर ग़म हुवा कि इस से पहले मैं कभी इतना ग़मगीन न हुवा था, فَرَفَعَهُ اللّٰهُ لِیْ اَنْظُرُ اِلَیْهِ مَا یَسْاَلُوْنِیْ عَنْ شَیْءٍ اِلَّا اَنْبَاْتُهُمْ بِهٖ तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बैतुल मक़्दस को मेरी ख़ातिर उठा लिया और मैं उसे देखने लगा, लिहाज़ा क़ुरैश मुझ से जिस जिस चीज़ के बारे में पूछते गए, मैं उन्हें बताता गया । (مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء برسول اللہ۔۔۔الخ، ص۱۰۶، حدیث۲۷۸)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن : मुशरिकीने मक्का के उन सुवालात के बारे में फ़रमाते हैं कि वोह सुवालात भी लाया'नी (फ़ुज़ूल) थे । मसलन येह कि बैतुल मक़्दस में सुतून कितने हैं ? सीढ़ियां कितनी है ? मिम्बर किस त़रफ़ है ? और ज़ाहिर है कि येह चीज़ें तो बार बार देखने पर भी याद नहीं रहतीं तो एक बार देखने पर याद कैसे रहतीं ? कुफ़्फ़ार ने कहा कि अ़र्श व कुरसी की बातें जो आप बयान कर रहें हैं, उन की तो हम को ख़बर नहीं, बैतुल मक़्दस हम ने देखा हुवा है, वहां की निशानियां आप हम को बताएं इसी लिये रब ने इस मे'राज के दो ह़िस्से किये (एक

मस्जिदे ह़राम) बैतुल मक़्दस तक, फिर (दूसरा) वहां से अ़र्श के आगे तक ताकि लोग इस (पहले) ह़िस्सए मे'राज को बहुत दलाइल से मा'लूम कर लें।(1) (लिहाज़ा जब बैतुल मक़्दस की कैफ़िय्यत पूछी गई तो) नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुछ तरद्दुद हुवा, क्यूंकि अगर्चे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बैतुल मक़्दस में दाख़िल हुवे थे लेकिन आप ने इस की कैफ़िय्यत के मुतअ़ल्लिक़ गहरी नज़र नहीं फ़रमाई थी, मज़ीद बर आं वोह रात भी तारीक थी। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام को हुक्म फ़रमाया तो उन्हों ने अपने परों पर बैतुल मक़्दस को उठा लिया और मक्कए मुकर्रमा में ह़ज़रते अ़क़ील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर के पास रख दिया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे देखते जाते और उन के सुवालों के जवाबात देते जाते। (याद रहे कि) बैतुल मक़्दस को उठा कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते आ़लिया में ह़ाज़िर किया जाना आप का मो'जिज़ा है, जिस त़रह़ बिल्क़ीस का तख़्त (उठा कर दरबार में ह़ाज़िर किया जाना) ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام का मो'जिज़ा है।(2)

बहर ह़ाल प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब बैतुल मक़्दस के बारे में मुशरिकीने मक्का की त़रफ़ से पूछे गए तमाम सुवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमा दिये तो चूंकि वोह तो हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस अ़ज़ीम मो'जिज़े पर ईमान लाने के बजाए इसे अ़क़्ल की कसोटी पर परख रहे थे बल्कि अपने बुग़्ज़ो इ़नाद की वजह से इस अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़े को झूटा साबित करने पर कमरबस्ता थे, लिहाज़ा बैतुल मक़्दस की निशानियां पूछने और इस पर मुंह की खाने के बा वुजूद भी अपनी हटधर्मी से बाज़ न आए और इमतिह़ान की ग़रज़ से उस क़ाफ़िले के बारे में सुवाल करने लगे जो मक्कए मुकर्रमा से तिजारत की ग़रज़ से शाम की जानिब गया था। चुनान्चे,

---

1....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8 स. 158

2 ....سیرۃ سید الانبیاء، ص ۱۳۱

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें बताया कि वोह क़ाफ़िला मक्का शरीफ़ और शाम के दरमियान फ़ुलां जगह पर मिला था, उस में इतनी ता'दाद में पैदल आदमी हैं और इतने ऊंट हैं। उन्हों ने फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि वोह शाम से वापसी पर किस दिन मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होगा, तो आप ने उन्हें जवाबन इरशाद फ़रमाया कि बुध के दिन इस माह की फ़ुलां तारीख़ को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होगा, उस के आगे आगे एक ख़ाकिस्तरी रंग का ऊंट होगा जिस के पालान के नीचे का टाट सियाह होगा और उस पर दो2 बोरे लदे होंगे, नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस त़रह़ फ़रमाया था, बिऐनिही उसी त़रह़ हुवा, आप के मो'जिज़ात के ज़ुहूर पर मुशरिकीन शर्मिन्दा हो गए लेकिन ईमान न लाए।(1)

## शबे मे'राज के मुशाहदात

शबे मे'राज, ह़बीबे किब्रिया, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने करोड़ों अ़जाइबात मुलाह़ज़ा फ़रमाए, जन्नत में तशरीफ़ ले गए, अपने उम्मतियों के जन्नती मह़ल्लात वग़ैरा मुलाह़ज़ा फ़रमाए, जहन्नम को देखा और जहन्नमियों के दर्दनाक अ़ज़ाबात भी देखे, फिर इन में से कुछ अपनी उम्मत की तरग़ीब और तरहीब के लिये बयान फ़रमा दिया ताकि उम्मती जहन्नमियों के दर्दनाक अ़ज़ाबात सुन कर नेक और अच्छे आ'माल के ज़रीए जहन्नम से बचने की तदाबीर करें और जन्नत की ना ख़त्म होने वाली ने'मतों का सुन कर उम्मती उन ने'मतों को पाने के लिये कोशिश करे। आइये ! चन्द एक वाक़िआत व मुशाहदात इख़्तिसारन सुनते हैं : शबे अस्रा के दुल्हा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं ने शबे मे'राज जन्नत के दरवाज़े पर लिखा हुवा देखा : ''सदक़े का सवाब 10 गुना और क़र्ज़ का सवाब 18 गुना है'',

---

1 ....سیرۃ سید الانبیاء، ص۱۳۱

www.dawateislami.net

मोतियों से बने हुवे गुम्बद नुमा आ़ली शान ख़ैमे मुलाह़ज़ा फ़रमाए जो कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के इमाम और मुअज़्ज़िनीन के लिये हैं, चन्द बुलन्दो बाला मह़ल्लात मुलाह़ज़ा फ़रमाए जो कि ग़ुस्सा पीने वालों और अ़फ़्वो दर गुज़र (या'नी मुआ़फ़) करने वालों के लिये हैं, रेशम के पर्दों से सजा हुवा एक मह़ल मुलाह़ज़ा फ़रमाया जो कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये है, जन्नत की सैर के दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल ह़बशी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के क़दमों की आहट समाअ़त फ़रमाई, शबे मे'राज जन्नती हूरों ने बारगाहे रिसालत (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में सलाम पेश किया, शबे मे'राज एक ऐसे शख़्स के पास से गुज़र हुवा जो अ़र्श के नूर से छुपा हुवा था, येह वोह ख़ुश नसीब था कि दुन्या में जिस की ज़बान **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र से तर रहती थी, इस का दिल मस्जिद में लगा रहता था, येह कभी अपने वालिदैन को बुरा कहे जाने या उन की बे इ़ज़्ज़ती किये जाने का सबब न बना।

शबे मे'राज जो सज़ा के इन्तिहाई दर्दनाक अ़ज़ाबात देखे उन में येह भी देखा कि कुछ लोगों के जबड़े खोले जा रहे थे, उन का गोश्त काट कर ख़ून के साथ ही उन्ही के मुंह में धकेला जा रहा था, येह वोह बद नसीब थे जो लोगों की ग़ीबतें करते थे, लोगों के ऐ़ब तलाशते थे, कुछ ऐसे मर्द और औ़रतों के क़रीब से आप का गुज़र हुवा जो अपनी छातियों के साथ लटका दिये गए थे, येह वोह बद नसीब थे, जो मुंह पर ऐ़ब लगाते थे और पीठ पीछे बुराई करते थे, मे'राज की रात, सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ ऐसे लोगों को भी देखा, जिन के पेट मकानों की त़रह़ बड़े बड़े थे और उन के पेट के अन्दर सांप बाहर से नज़र आ रहे थे, येह बद नसीब सूदख़ोर थे, शबे मे'राज आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे लोगों के पास तशरीफ़ लाए जिन के सर पथ्थरों से कुचले जा रहे थे येह वोह बद नसीब थे, जिन के सर नमाज़ से बोझल हो जाते

थे, उम्मत के ख़ुत़बा और अपने कहे पर अ़मल न करने वालों और क़ुरआन पढ़ कर उस पर अ़मल न करने वालों को देखा कि उन के होंट आग की क़ैंचियों से मुसलसल काटे जा रहे थे, मे'राज की शब, दोज़ख़ में कुछ लोगों को आग की शाख़ों के साथ लटका हुवा देखा, येह वोह बद नसीब थे, जो दुन्या में वालिदैन (या'नी मां-बाप) को गालियां देते थे, बदकारी करने वाली और फिर अवलाद को क़त्ल करने वाली औ़रतों को इस ह़ाल में देखा कि उन्हें छातियों और पाउं से लटका दिया गया था। यतीमों का माल खाने वालों को इस ह़ाल में देखा कि उन के होंट पकड़ कर आग के बड़े बड़े पथ्थर उन के मुंह में डाले जा रहे थे और येह पथ्थर उन के नीचे से निकल रहे थे, ज़कात अदा न करने वालों को इस ह़ाल में देखा कि वोह चोपायों की त़रह़ जहन्नम के ज़हरीले पौदे और जहन्नम के गर्मा गर्म पथ्थर निगल रहे थे।

## कर ले तौबा...!!!

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ज़रा इन अ़ज़ाबों पर ग़ौर कीजिये और फिर अपनी नातुवानी व कमज़ोरी को देखिये, आह ! हमारी कमज़ोरी का ह़ाल तो येह है कि हल्का सा सर दर्द या बुख़ार तड़पा कर रख देता है तो फिर आख़िरत के येह दर्दनाक अ़ज़ाब क्यूं कर बरदाश्त किये जा सकते हैं, इस लिये अभी वक़्त है डर जाइयें और जो फ़र्ज़ होने के बा वुजूद ज़कात अदा नहीं करते फ़ौरन से पेशतर इस से तौबा करें और जितने सालों की ज़कात बाक़ी है, ह़िसाब कर के जल्द अज़ जल्द अदा कर दें वरना अगर येह मौक़अ़ हाथ से निकल गया और तौबा से पहले ही मौत ने आ लिया तो फिर मौक़अ़ नहीं मिलेगा।

*कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी*
*क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

## किताब 'फ़ैज़ाने मे'राज' का तआरुफ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस मो'जिज़े का फ़ैज़ान आ़म करने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मजलिस अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ने एक किताब बनाम **'फ़ैज़ाने मे'राज'** तरतीब दी । जिस में मुकम्मल वाक़िअ़ए मे'राज, इस के मुतअ़ल्लिक़ आयाते मुबारका, अह़ादीसे त़य्यिबा और इन से ह़ासिल होने वाले मदनी फूलों समेत वाक़िअ़ए मे'राज में प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशाहदात का तज़किरा भी किया गया है । इस किताब के मुत़ालए़ से इश्क़े रसूल में इज़ाफ़े के साथ साथ اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का ढेरों ख़ज़ाना हाथ आएगा । तमाम इस्लामी भाइयों से मदनी इल्तिजा है कि इस किताब को हदिय्यतन ख़रीद फ़रमा कर ज़रूर बिज़्ज़रूर इस का मुत़ालआ़ कीजिये ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## मजलिसे आई टी का तआ़रुफ़ :

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इन्सानी ज़िन्दगी तरक़्क़ी की मन्ज़िलें त़ै करती हुई आज जिस दौर से गुज़र रही है, इस में कम्प्यूटर और इन्टरनेट का किरदार बहुत अहम है । फ़ी ज़माना इन्फ़ोरमेशन टेकनोलोजी किसी न किसी सूरत में ज़िन्दगी के हर शो'बे पर असर अन्दाज़ है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी ने इस्लाह़े उम्मत के लिये दुन्या भर में इस्लाम की बहारें लुटाने के लिये जो मुतअ़द्दद मजालिस और शो'बे क़ाइम किये, इन्ही में से एक शो'बा, **'मजलिसे आई टी'** भी है, जिस का काम इन्फ़ोरमेशन टेकनोलोजी के ज़रीए़ दुन्या भर के लोगों को इस्लाम के महके महके मदनी फूल पेश करना है, मजलिसे आई टी के कारहाए नुमायां में से आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शोहरए आफ़ाक़

www.dawateislami.net

फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ और तर्जमए कुरआन कन्जुल ईमान को सॉफ़्टवेर की शक्ल में पेश करना भी है जो लाइके़ सद तह़सीन है, मजलिसे तौक़ीत के तआ़वुन से एक ऐसा सॉफ़्टवेर भी मुतआ़रिफ़ करवाया है जो कम्प्यूटर और मोबाइल वग़ैरा पर नमाज़ों के दुरुस्त अवक़ात की निशानदेही में ह़द दरजा मुफ़ीद है। अल मदीना लाइब्रेरी सॉफ़्टवेर के ज़रीए़ दो सो (200) से ज़ाइद कुतुब का ब आसानी मुत़ालआ़ किया जा सकता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मजलिसे आई टी के तय्यार कर्दा येह तमाम सॉफ़्टवेर्ज़ मक्तबतुल मदीना से सीडीज़ की सूरत में भी ह़ासिल किये जा सकते हैं।

*अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में*
*ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो*

## बारह मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये

मज़ीद इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने और सुन्नतों पर अ़मल करने और पूरी दुन्या में नेकी की दा'वत की धूमें मचाने के लिये दा'वते इस्लामी के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। इन 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम **'हफ़्तावार इजतिमाअ़ भी है।'** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त तिलावते कुरआन, ना'ते रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, सुन्नतों भरे बयान, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं, ज़िक्रो दुरूद, सलातो सलाम के मदनी फूलों और इ़ल्मे दीन के गुलदस्तों से सजे हुवे होते हैं और यक़ीनन इस त़रह़ के इजतिमाआ़त में शिर्कत कसीर अज्रो सवाब और बरकात के ह़ुसूल का ज़रीआ़ है। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ का आग़ाज़ बा'द नमाज़े मग़रिब सूरए मुल्क की तिलावत से होता है, तिलावते कुरआने मजीद के बा'द ना'त शरीफ़ पढ़ी जाती है, सुन्नतों भरा बयान भी होता है, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में 'ज़िक्रुल्लाह' भी करवाया जाता है।

www.dawateislami.net

ज़िक्र के बा'द दुआ भी होती है, जिस की बरकत से न जाने कितने ही ख़ाली दामन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से गोहरे मुराद से भर जाते हैं और न जाने कितने ही बद किरदार बा किरदार बन जाते हैं। आइये एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं।

## ला उबाली पन का शिकार एक नौजवान

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की बरकत का अन्दाज़ा इस मदनी बहार से लगाइये, जैसा कि मुल्तान रोड़ (मर्कज़ुल औलिया लाहौर) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ की तह़रीर भेजी कि मैं ला उबाली और शौख़ त़बीअ़त का मालिक था, अपनी मस्ती में मस्त, दुन्या की मह़ब्बत के नशे में धुत, गुनाहों और ग़फ़्लतों की वादियों में गुम था, टिफ़न बजा कर बच्चों वाले गीत गाने और क़व्वालों की नक़्लें उतारने के मुआ़मले में ख़ानदान भर में मशहूर था। शादी व दीगर तक़रीबात में मिज़ाहिय्या चुटकुले और फ़िल्मी ग़ज़लें सुनाना, गाने गाना, बे ढंगे अन्दाज़ में नाच दिखाना और त़रह़ त़रह़ के नख़रों से लोगों को हंसाना मेरा मह़बूब मश्ग़ला था, स्कूल का ज़माना था, एक बा इमामा इस्लामी भाई अक्सर बड़े भाई जान से मिलने आया करते थे। एक दिन भाई जान ने मेरा तआ़रुफ़ करवाया तो उन्हों ने मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दावत पेश की। मैं उन की दा'वत पर जुमा'रात को सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में जा पहुंचा, मुझे बहुत अच्छा लगा। यूं मैं ने पाबन्दी से जाना शुरूअ़ कर दिया और दीगर क्लास फ़ेलोज़ को भी दा'वत पेश की जिस पर वोह भी आने लगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी। आहिस्ता आहिस्ता इमामा शरीफ़ भी सज गया, जिस पर घर के बा'ज़ अफ़राद ने सख़्ती के साथ मुख़ालफ़त की ह़त्ता कि बसा अवक़ात مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ इमामा शरीफ़ खींच कर उतार दिया जाता। दर्स देने से रोका जाता, ज़ुल्फ़ें रखीं तो घर वालों ने ज़बरदस्ती कटवा दीं, दाढ़ी अभी निकली नहीं थी मगर सजाने की

निय्यत कर ली थी । इन तमाम आज़्माइशों के बा वुजूद मदनी माह़ोल की कशिश और आ़शिक़ाने रसूल का ह़ुस्ने सुलूक मुझे दा'वते इस्लामी के क़रीब से क़रीब तर करता चला गया । मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनने से ढारस बन्धी और ह़ौसला मिलता चला गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता घर में भी मदनी माह़ोल बन गया । वोह घर वाले जो सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की इजाज़त नहीं देते थे उन्हों ने मुझे यकमुश्त बारह माह सफ़र की इजाज़त दे दी । घर में इस्लामी बहनों का इजतिमाअ़ शुरूअ़ हो गया । वालिद साह़िब ने दाढ़ी सजा ली । येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की एक '**मजलिस**' की ज़िम्मेदारी मिली हुई है । (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 407 बित्तग़य्युरे क़लील)

*गर्चे फ़नकार हो, क़ाफ़िले में चलो गो गुलूकार हो, क़ाफ़िले में चलो*
*ख़ुल्द दरकार हो, क़ाफ़िले में चलो फ़ज़्ले ग़फ़्फ़ार हो, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## बयान करने के मुतअ़ल्लिक़ मा'रूज़ात

(1) **बयान करने से पहले कम अज़ कम एक बार लाज़िमन पढ़ लें**

(2) **जो कुछ लिखा है वोही सुनाएं, अपनी त़रफ़ से कमी-बेशी न करें**

(3) **हेडिंग, ह़वालाजात, आयात, और अ़रबी इ़बारात हरगिज़ न पढ़ा करें**

(4) **बयान के बारे में मुफ़ीद मश्वरें मजलिसे तराजिम को इरसाल करें**

**-: राबित़ा :-**

**MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)**

translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)

www.dawateislami.net